शोक समाचार

1. राजकोट निवासी 100 वर्षीय डॉ. चन्दूभाई कामदार का दिनांक 16 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप गहन स्वाध्यायी एवं तत्त्वरसिक थे।

आप गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त थे, लगभग 27 वर्ष की आयु से ही आप गुरुदेवश्री के सानिध्य में सोनगढ रहने लगे थे। गुरुदेवश्री के प्रवचनों में विषय के स्पष्टीकरण के लिये शंकायें प्रस्तुत कर खुलासा करवाने में आपका विशेष श्रेय रहा है। आपके देहावसान से राजकोट मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

2. पण्डित महेन्द्रजी जैन बरायठावालों का दिनांक 16 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप गहन स्वाध्यायी एवं तत्त्वरसिक थे। आपने लम्बे समय तक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का समागम प्राप्त किया। आप दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ बाहर भी जाया करते थे। सागर में दैनिक स्वाध्याय सभा भी चलाया करते थे।

3. भीलवाड़ा निवासी श्री महाचंदजी सेठी के सुपुत्र चि. राकेश सेठी का दिनांक 23 अगस्त को 52 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप कुछ समय से अस्वस्थ भी थे। आपको गुरुदेवश्री के प्रति गहरी आस्था थी और निरन्तर तत्त्वाभ्यास में संलग्न रहते थे। आपकी स्मृति में संस्था को 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

4. जयपुर (राज.) निवासी श्री मूलचन्दजी छाबड़ा मारौठ वालों की माताजी का दिनांक 23 अगस्त को देहावसान हो गया है। आप स्मारक भवन में चलने वाले दैनिक स्वाध्याय का लाभ लिया करती थीं। ज्ञातव्य है कि श्री मूलचंदजी छाबड़ा जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के उपकोषाध्यक्ष भी हैं।

5. खड़ैरी (म.प्र.) निवासी श्रीमती बेटीबाई माताश्री श्री साव लालचंद बाबूलालजी का 96 वर्ष की आयु में दिनांक 13 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान एवं पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 251/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

(पृष्ठ 13 का शेष ...)

मुझे जगत का कोई पदार्थ अनुकूल-प्रतिकूल नहीं, मैं तो निर्विकल्प ज्ञायक मूर्ति हूँ - ऐसी परमसमता श्रद्धा में प्रगट करना सम्यग्दर्शन धर्म है। जो जीव अपने परिणाम को समभाव में स्थापित करके परमसमता के आलम्बन पूर्वक अपने अन्तरङ्ग में विराजमान कारणपरमात्मा को देखता है, उसे निश्चय आलोचन होता है।[१]''

ध्यान रहे, यह आलोचना के प्रथम भेदरूप आलोचन का स्वरूप स्पष्ट करनेवाली गाथा है। अत: इसमें आलोचना का नहीं, आलोचन का स्वरूप स्पष्ट किया गया है।

इस गाथा में मुख्यरूप से यही कहा गया है कि **जब यह आत्मा अन्तरोन्मुख होकर कारणपरमात्मारूप अपने आत्मा का अवलोकन करता है, आत्मा का अनुभव करता है; तब उसका यह अवलोकन ही निश्चय आलोचन है॥१०९॥** **(क्रमश:)**

१. नियमसार प्रवचन, पृष्ठ ८९५

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2537) 339 अंक : 3

और सबै जग...

और सबै जग द्वन्द मिटावो, लौ लावो जिन आगम ओरी।। टेक।।

है असार जग द्वन्द बन्धकर, यह कछु गरज न सारत तोरी।

कमला चपला, यौवन सुरधनु, स्वजन पथिकजन क्यों रति जोरी।।

और सबै जग... ।।1।।

विषय कषाय दुखद दोनों ये, इनतें तोर नेह की डोरी।

परद्रव्यन को तू अपनावत, क्यों न तजै ऐसी बुधि मोरी।।

और सबै जग... ।।2।।

बीत जाय सागर थिति सुर की, नर परजाय तनी अति थोरी।

अवसर पाय 'दौल' अब चूको, फिर न मिलै मणि सागर बोरी।।

और सबै जग... ।।3।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का व्याख्यान

परद्रव्यनतैं भिन्न आपमें रुचि सम्यक्त्व भला है;
आपरूप को जानपनो सो सम्यक्ज्ञान कला है।
आपरूप में लीन रहे थिर सम्यक्चारित सोई;
अब व्यवहार मोक्षमग सुनिये, हेतु नियत को होई।।२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

बाहर के अप्रयोजनभूत तत्त्व को जानने में आत्मा का हित नहीं है; उस बाह्यज्ञान द्वारा मोक्ष नहीं साधा जाता; परलक्ष्यी शास्त्रज्ञान भी मोक्ष को नहीं साध सकता। जो ज्ञान आत्मा के मोक्ष का साधन न हो, जो आनन्द का अनुभव न दे, उसको ज्ञान कौन कहे ? शुद्धात्मा की ओर झुका हुआ ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है, वही मोक्ष को साधने वाला है और वही आनन्द का दाता है। अंतर में शुद्धात्मा के ऐसे ज्ञानसहित शास्त्रज्ञान आदि हो, उसको व्यवहार से मोक्ष का कारण कहा जाता है। शुद्धात्मा की सम्यक्श्रद्धा सहित नवतत्त्व की प्रतीति को व्यवहार सम्यग्दर्शन कहा जाता है। निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र में तो शुद्धात्मा की स्वसत्ता का ही अवलंबन है, उसमें पर का अवलंबन किंचित् मात्र भी नहीं है। ऐसा स्वाधीन आत्माश्रित निश्चय-मोक्षमार्ग है।

पर से भिन्न आत्मा के वास्तविक स्वरूप के श्रद्धा-ज्ञान के बाद ही उसमें लीनता हो सकती है; निजस्वरूप में लीनता द्वारा जितनी वीतरागी शुद्धता हुई, उतना सम्यक्चारित्र है। व्रत संबंधी शुभ विकल्प चारित्र नहीं है, वह तो चारित्रदशा के साथ निमित्तरूप है। वीतरागता ही चारित्र है, राग तो आस्रव का ही कारण है, मोक्ष का नहीं।

अहा ! ऐसे स्पष्ट वीतरागी मार्ग को भूलकर अज्ञानी लोगों ने राग को मोक्षमार्ग मान लिया है। राग में मोक्षमार्ग मानना तो काँच के टुकड़े में अति मूल्यवान चैतन्यहीरा मानने जैसी बात है। जो राग से मोक्ष की प्राप्ति होना मानता है, उसने तो राग जितना ही मोक्ष का मूल्य समझ लिया है, वीतरागी आनन्दरूप मोक्ष की उसे पहचान ही नहीं है। भाई ! पूर्ण आनन्दमय मोक्षपद ऐसा नहीं है कि वह तुझे राग में मिल जाये।

(शेष पृष्ठ 19 पर...)

(पृष्ठ 14 का शेष ...)

वीतरागी आनन्दरूप मोक्ष को प्राप्त करने का मूल्य भी कोई अलौकिक है। अखंड चैतन्यस्वभाव को स्वीकार करके उसके श्रद्धा-ज्ञान-चारित्ररूप वीतरागभाव से ही मोक्ष सधता है, इससे जुदा दूसरा कोई साधन नहीं है।

अहा ! ज्ञान आनन्द की अनन्त किरणों से चमचमाता हुआ चैतन्य हीरा तो वीतरागता का ही पुंज है, उसमें लीनतारूप वीतरागता ही सच्चा चारित्र है- ऐसे चारित्र को भगवान ने परम धर्म कहा है। उसको छोड़कर जो पर में और रागादि व्यवहार भावों में लीन होकर उसको चारित्रधर्म मान लेता है, वह मिथ्यादृष्टि है, उसको तो व्यवहारचारित्र भी नहीं होता। (लीन भयो व्यवहार में, मुक्ति कहाँ सो होय ?) पहले चारित्र ले लो बाद में सम्यग्दर्शन होगा - ऐसा जो मानता है, वह न तो सम्यग्दर्शन को जानता है और न चारित्र को। अरे भाई ! श्रद्धा के बिना चारित्र कैसा? आत्मा को जाने बिना तू किसमें लीन होगा ? चारित्र का मूल कारण तो सम्यग्दर्शन और ज्ञान है, उसको अंगीकार न करके तूने शुभरागरूप चारित्र को सम्यग्दर्शन का कारण माना; अत: तेरे अभिप्राय से तो सारा मोक्षमार्ग रागरूप ही हुआ, उसमें कहीं वीतरागता या शुद्धात्मा का आश्रय करने का कथन तो आया ही नहीं। स्वद्रव्य के आश्रयरूप वीतरागता के बिना मोक्षमार्ग कैसा ? शुद्धात्मा के आश्रित ही सच्चा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है और वही मोक्षमार्ग है।

समयसार गाथा २७६-२७७ में कहते हैं कि शुद्धात्मा ही ज्ञान है; क्योंकि वह ज्ञान का आश्रय है, शुद्धात्मा ही दर्शन है; क्योंकि वह दर्शन का आश्रय है और शुद्धात्मा ही चारित्र है; क्योंकि वह चारित्र का आश्रय है - इसप्रकार निश्चय है। निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र शुद्ध आत्मा के ही आश्रित है; अत: अभेदरूप से इन तीनों को शुद्ध आत्मा ही कह दिया।

शास्त्रों का ज्ञान, नवपदार्थों की श्रद्धा और पंचमहाव्रत के शुभभावरूप चारित्र व्यवहार है; क्योंकि उनके होने पर भी यदि शुद्धात्मा का आश्रय न हो तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र नहीं होते।

अत: पराश्रित व्यवहार - मोक्षमार्ग में निषेध्य है और स्वाश्रित निश्चय - मोक्षमार्ग में उपादेय है - यह सिद्धान्त है।

देखो ! पहले निश्चयमोक्षमार्ग दिखाकर बाद में कहा कि अब व्यवहार मोक्षमार्ग सुनो। जहाँ निश्चय हो, वहाँ व्यवहार कैसा होता है, इसका ज्ञान कराते हैं। जिसको निश्चय का लक्ष नहीं, उसको व्यवहार कैसा ? व्यवहार को नियत का हेतु कहा, परन्तु वह व्यवहार कौन-सा ? वही जो निश्चय के साथ हो। निश्चय न हो और अकेला व्यवहार हो, उसको

हेतु नहीं कहा जाता। इसप्रकार व्यवहार को हेतु कहा, वह 'धर्मास्तिकायवत्' जानना। जैसे धर्मास्तिकाय गमन में हेतु है; परन्तु किसको ? जो स्वयं गति करते हैं, उनको; वैसे व्यवहार निश्चय का हेतु है; परन्तु किसको ? जो स्वाश्रय से निश्चय धर्म प्रगट करते हैं, उनको। किसी ने पंचमहाव्रतादि व्यवहार का तो पालन किया; परन्तु स्वाश्रय से निश्चय-सम्यग्दर्शनादि प्रगट नहीं किया तो उसके लिए वह व्यवहार हेतु भी नहीं हुआ। (जैसे स्वयं गति नहीं करने वाले को धर्मास्तिकाय हेतु भी नहीं होता, वैसे)।

यदि अकेला व्यवहार भी निश्चय का हेतु होता हो तो -

'मुनिव्रत धार अनंतबार ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतमज्ञान बिना सुख लेश न पायो।।'

पंचमहाव्रतादि व्यवहार अनन्त बार किया तो भी जीव को वह निश्चय श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का हेतु क्यों न हुआ ? उपादान के बिना निमित्त क्या करे ? उपादान-निमित्त के दोहे में भैया भगवतीदासजी भी कहते हैं कि -

उपादान निज बल जहाँ, तहाँ निमित्त पर होय।
भेदज्ञान-परवान-विधि, विरला बूझे कोय।।

आत्मा परद्रव्यों से सदा भिन्न है; ऐसे अपने आत्मा का अटल विश्वास; सो सम्यग्दर्शन है। अटल अर्थात् जो कभी नहीं मिटता, आत्मा से कभी भिन्न नहीं होता, सिद्धदशा में भी आत्मा के साथ सदैव रहता है, सो निश्चय सम्यग्दर्शन है। व्यवहार सम्यग्दर्शन तो सदैव विकल्परूप है, पर के आश्रित है, वह सिद्धदशा में नहीं रहता। वह आत्मारूप नहीं, परन्तु विकल्परूप है; अत: वीतरागदशा होने पर वह विकल्प छूट जाता है। निश्चय सम्यग्दर्शन तो आत्मारूप है, वह सिद्धदशा में भी सदा काल रहता है। उसीप्रकार निश्चय सम्यग्ज्ञान को तथा निश्चय सम्यक्चारित्र को भी आत्मारूप जानना; विकल्प से वे भिन्न हैं।

विकल्परूप व्यवहारभावों से आत्मा भिन्न होने पर भी उनके साथ आत्मा को एकमेक मानना अज्ञानी जीवों का मिथ्या प्रतिभास है और उसका फल संसार है। समस्त परभावों से भिन्न आत्मा को देखना-जानना-अनुभव करना मोक्ष का मार्ग है।

भव्यजीवों को ऐसे मोक्षमार्ग का सदा सेवन करना चाहिए। शुभराग के काल में भी धर्मी उस राग को मोक्षमार्ग नहीं समझते; परन्तु उस समय भी स्वभाव के आश्रय से रत्नत्रय की जितनी शुद्धता हुई, उसी को मोक्षमार्ग समझते हैं।

इसप्रकार सच्चा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही मोक्षमार्ग है; सच्चा अर्थात् निश्चय; **'जो सत्यारथरूप सो निश्चय'** और उस निश्चय के साथ भूमिका के योग्य व्यवहार होता है, उसका कथन आगे के छंद में कहते हैं। ●

नियमसार प्रवचन -

स्वभाव में जीवस्थान आदि नहीं

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 42वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।४१।।

इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।
एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं।।41।।

जीव को चार गति के भवों में परिभ्रमण, जन्म, जरा, मरण, रोग, शोक, कुल, योनि, जीवस्थान और मार्गणास्थान नहीं हैं।

यहाँ त्रिकाली शुद्धभाव को जीव कहा है, वर्तमान पर्याय को जीव नहीं कहा। परिभ्रमण की एक समय की पर्याय शुद्धजीव में नहीं है। शुद्धजीव का आश्रय लेने पर चतुर्गतिभ्रमण, रोग, जन्म, मरण आदि टल जाते हैं; अतः जीव को चारगति का भ्रमण नहीं है; जन्म, मरण, रोग, शोक नहीं है; कुल, योनि नहीं है; जीवस्थान, मार्गणास्थान नहीं है।

यह सब एक समय की पर्याय की योग्यता अवश्य है; परन्तु यह व्यवहारनय का विषय है। ये सभी भेद हैं। अभेद स्वभाव में, शुद्धनिश्चयनय के विषय में ये भेद नहीं हैं।

त्रिकाली स्वभाव को देखनेवाली दृष्टि से एवं एकरूप शुद्धस्वभाव को देखनेवाले ज्ञान के पक्ष से देखें तो जीव त्रिकालशुद्ध है और समस्त सांसारिक विकारों का समुदाय नहीं है - ऐसा इस गाथा में कहा है।

चारगतिरूप परिभ्रमण एक समय की पर्याय में है, शुद्धजीव में नहीं।

त्रिकाली स्वभाव की दृष्टि ज्ञानावरणी आदि आठ पुद्गल कर्मों को तथा राग-द्वेषादि भाव कर्मों को स्वीकार नहीं करती। पुण्य-पापादि क्षणिक भावों को जो जीव स्वीकार करता है, उसको शुद्धस्वभाव का स्वीकार नहीं है, वह नवीन कर्म बाँधता है और चतुर्गति में भटकता है। धर्मीजीव को पुण्य-पाप का तथा कर्म का स्वीकार नहीं,

उसे तो शुद्धचैतन्य का स्वीकार है, उसे पर्यायबुद्धि नहीं ह्न स्वभावबुद्धि है। निर्बलता का राग-द्वेष होता है, किन्तु वह गौण है, उसका अस्वीकार है; अतः उसी के फलरूप गति का भी स्वीकार नहीं।

श्रेणिक राजा वर्तमान में नरक में हैं; तथापि उन्हें पुण्य-पाप अथवा नरकगति का स्वीकार नहीं, शुद्ध चैतन्यस्वभाव का ही स्वीकार है। पशुगति में भी कुछ योग्यजीव धर्म प्राप्त कर लेते हैं। ढाईद्वीप के बाहर असंख्य तिर्यंच श्रावक के व्रत ग्रहण किये हुए हैं, वे सभी तिर्यंचगति अथवा अल्प राग-द्वेष को स्वीकार न करते हुए शुद्धस्वभाव का ही स्वीकार करते हैं। धर्मी मनुष्य को कर्म का, राग का तथा मनुष्यगति का स्वीकार नहीं, शुद्धस्वभाव का ही स्वीकार है। धर्मी देव को भी शुद्धस्वभाव का ही आदर है, अन्य का नहीं।

इस भाँति चारों गतियों के धर्मी जीवों को स्वभाव की एकाग्रता है, अतः परिभ्रमण नहीं है। पर्याय में गति, राग-द्वेष अथवा द्रव्यकर्म होता है; परन्तु चारगति का भ्रमण त्रिकाली स्वभाव में नहीं है; ऐसा बतलाकर पर्यायबुद्धि छुड़ाकर स्वभावदृष्टि कराने का प्रयोजन है। गति के ऊपर का लक्ष छोड़कर गतिरहित पंचमभाव-शुद्धभाव को ग्रहणकर ह्न ऐसा कहने का आशय है।

जन्म, जरा, मरण, रोग, शोकादिका सम्बन्ध पर्याय के साथ ही है, शुद्धजीव में ऐसे भेद नहीं हैं।

नित्यशुद्धचिदानन्दरूप कारणपरमात्मास्वरूप जीव को द्रव्यकर्म तथा भावकर्म के ग्रहण करने योग्य विभाव परिणति का अभाव होने से जरा-रोगादि नहीं।

कारणपरमात्मा त्रिकालशुद्ध है, उसका रूप ज्ञान और आनन्दमय है। दयादानादिरूप विकारभाव उसका रूप नहीं है। शक्तिस्वभाव परमात्मा में से अथवा उसमें एकाग्र होने से मोक्षरूपी कार्य प्रकट होता है, इसलिये उसे कारणपरमात्मा कहते हैं।

यहाँ कोई **प्रश्न** करे कि वह कारणपरमात्मा दिखलाई क्यों नहीं पड़ता?

समाधान : जिसको भान नहीं है, उसको नहीं दिखाई पड़ता। वर्तमान श्रवण करते हुये अमुक प्रकार का विचार आता है, उस विचार की पर्याय कहाँ से आती है? अज्ञानी मानता है कि उस विचार की पर्याय का उत्पाद निमित्त में से अथवा राग में से हुआ है, परन्तु वह भ्रान्ति है। परवस्तु में से आत्मा की पर्याय नहीं आती और न ही आत्मा की एक-एक पर्याय में से दूसरी पर्याय आती है; किन्तु पर्यायवान आत्मा

शक्तिस्वभाव से भरपूर है, उसी में से पर्यायें प्रवाहित होती हैं। प्राप्त की प्राप्ति होती है। त्रिकाल कारणपरमात्मा शक्तिरूप है, उसमें से मोक्ष की पर्याय प्रकट होती है ह्न ऐसा भान नहीं है, इसलिये उसे कारणपरमात्मा दिखाई नहीं देता। वह संसार में ही भटकता है और उसका भान होते ही संसार से पार होता है।

जन्म : शरीर के उत्पन्न होने को जन्म कहते हैं। जन्म जीव के साथ शरीर के संयोग का नाम है। त्रिकाली स्वभाव की रुचि वाले को देह में रुचि अर्थात् एकत्वबुद्धि नहीं रहती।

जरा : शरीर की वृद्धावस्था को जरा कहते हैं। त्रिकाली स्वभाव की रुचि होने पर जरा की रुचि नहीं रहती। जरा शरीर पर लागू होती है; चैतन्य पर नहीं; ऐसे भानवाले को जरा के अभावरूप परिणमन क्षण-क्षण में होता रहता है।

मरण : शुद्धकारणजीव को मरण नहीं ह्न ऐसे दृष्टिवन्त को वास्तव में मरण नहीं है।

शोक : शुद्धकारणपरमात्मा में शोक नहीं, ऐसी दृष्टिवाले ज्ञानी को शोक का ग्रहण नहीं; अल्प शोक होता है उसे गौण करके गिना नहीं, कारण कि ज्ञानी की रुचि पलट गई है, इसलिये उसको शोक के अभावरूप परणति प्रतिक्षण होती है।

शरीर के आकारों के भेदों की योग्यता जीव की पर्याय में है; परन्तु शुद्धजीव में वैसे कुल के भेद नहीं हैं।

चारगति के जीवों के कुल अर्थात् शरीर के आकार तथा योनि अर्थात् उपजने के स्थानों के भेद नहीं हैं।

पृथ्वीकायिक : मीठे, खारे वगैरह में जीव हैं और उनके बाईस लाख करोड़ शरीर की आकृति के भेद हैं। एकसमय की अवस्था में भेद हैं, किन्तु शुद्धस्वभाव में भेद नहीं हैं। मिट्टी खोदने पर जीवित मिट्टी निकली ऐसा लोग कहते हैं वह सचित्त हैं। पत्थर ताजा निकलें उसमें भी जीव हैं और बाद में वे पर जाते हैं; परन्तु शुद्धजीव में ऐसे कोई भेद नहीं हैं।

अपकायिक : पानी के एक बिन्दु में असंख्य जीव हैं। उनके सातलाख करोड़ कुल हैं। शुद्धजीव में ऐसे भेद नहीं हैं। ये सब भेद पर्याय में हैं।

तेजकायिक : चूल्हे की अग्नि में, दियासलाई की ज्वाला में असंख्यात अग्निकायिक जीव हैं। उनके तीनलाख करोड़ कुल हैं। ऐसे भेद शुद्धजीव में नहीं हैं।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सम्यक्त्व का आत्मभूत लक्षण क्या है ?

उत्तर : स्व-पर का यथार्थ भेदज्ञान सदा सम्यक्त्व के साथ ही होता है तथा यह दोनों पर्यायें एक ही स्व-द्रव्य के आश्रय से होती हैं, इसलिये भेदविज्ञान सम्यक्त्व का आत्मभूत लक्षण है। गुण-भेद की अपेक्षा से सम्यक्त्व का आत्मभूत लक्षण निर्विकल्प प्रतीति है और सम्यक्त्व का अनात्मभूत लक्षण भेदविज्ञान है - ऐसा भी कहा जाता है; किन्तु निर्विकल्प अनुभूति को सम्यक्त्व का लक्षण नहीं कहा; क्योंकि वह सदा टिकी नहीं रहती। इतनी बात अवश्य है कि सम्यक्त्व के उत्पत्तिकाल में अर्थात् प्रकट होते समय निर्विकल्प अनुभूति अवश्यमेव होती है; इसलिए उसे 'सम्यक्त्वोत्पत्ति' अर्थात् सम्यक्त्व प्रकट होने का लक्षण कह सकते हैं।

अनुभूति सम्यक्त्व के सद्भाव को प्रसिद्ध अवश्य करती है; परन्तु जिस समय अनुभूति नहीं हो रही होती है, उस समय भी सम्यक्त्वी के सम्यक्त्व का सद्भाव तो रहता ही है; इसलिए अनुभूति को सम्यक्त्व के लक्षण के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। लक्षण तो ऐसा होना चाहिए कि जो लक्ष्य के साथ सदैव रहे और जहाँ लक्षण न हो, वहाँ लक्ष्य भी न हो।

प्रश्न : अनुभूति को सम्यग्दर्शन का लक्षण कह सकते हैं या नहीं ?

उत्तर : अनुभूति को लक्षण कहा है; लेकिन वास्तव में तो वह ज्ञान की पर्याय है, सही लक्षण तो प्रतीति ही है। केवल आत्मा की प्रतीति - यह श्रद्धान (सम्यग्दर्शन) का लक्षण है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन प्रगट करने के लिए पात्रता कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर : पर्याय सीधी द्रव्य को पकड़े, वह सम्यग्दर्शन की पात्रता है। तदतिरिक्त व्यवहार-पात्रता तो अनेक प्रकार की कही जाती है। मूल पात्रता तो दृष्टि द्रव्य को पकड़कर स्वानुभव करे, वही है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन प्राप्त करने वाले की व्यवहार योग्यता कैसी होती है ?

उत्तर : निमित्त से अथवा राग से सम्यग्दर्शन नहीं होता, पर्याय-भेद के आश्रय से भी नहीं होता, अन्दर में ढलने से ही सम्यग्दर्शन होता है, अन्य किसी विधि से नहीं; इसप्रकार की दृढ़ श्रद्धा-ज्ञान होना, वही सम्यग्दर्शन होने वाले की योग्यता है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन के लिए खास प्रकार की पात्रता का लक्षण क्या है ?

उत्तर : जिसको अपने आत्मा का हित करने के लिए अन्दर से वास्तविक लगन हो, आत्मा को प्राप्त करने की तड़फड़ाहट हो, दरकार हो, वास्तविक छटपटाहट हो; वह कहीं भी अटके बिना - रुके बिना अपना कार्य करेगा ही।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन न होने में भावज्ञान की भूल है अथवा आगमज्ञान की ?

उत्तर : अपनी भूल है। यह जीव स्व-तरफ नहीं झुककर, पर-तरफ रुकता है -यही भूल है। विद्यमान शक्ति को अविद्यमान कर दिया, अर्थात् प्राप्त शक्ति को अप्राप्त जैसा समझ लिया, अपनी त्रिकाली शक्ति के अस्तित्व को नहीं पहचाना - यही अपनी भूल है। त्रिकाली वर्तमान शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार कर ले - देख ले तो भूल टल जाए।

प्रश्न : तत्त्वविचार तो सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का निमित्त है। उसका मूल साधन क्या है ?

उत्तर : मूल साधन अन्दर में आत्मा है, वहाँ दृष्टि का जोर जावे और 'मैं एकदम पूर्ण परमात्मा ही हूँ - ऐसा विश्वास आवे, जोर आवे और दृष्टि अन्तर में ढले तब सम्यग्दर्शन होता है। उससे प्रथम तत्त्व का विचार होता है, उसकी भी रुचि छोड़कर जब अन्दर में जाता है तब उस विचार को निमित्त कहा जाता है।

प्रश्न : नवतत्त्व को जानना सम्यग्दर्शन है या शुद्धजीव को जानना सम्यग्दर्शन है?

उत्तर : नवतत्त्व को यथार्थरूप से जानने पर उसमें शुद्धजीव का ज्ञान भी साथ में आ ही जाता है तथा जो शुद्धजीव को जानता है, उसको नवतत्त्व का भी यथार्थ ज्ञान अवश्य होता है। इसप्रकार नवतत्त्व के ज्ञान को सम्यक्त्व कहो अथवा शुद्धजीव के ज्ञान को सम्यक्त्व कहो - दोनों एक ही हैं। (ज्ञान कहने पर उस ज्ञानपूर्वक की प्रतीति को सम्यग्दर्शन समझना) इसमें एक विशेषता यह है कि सम्यक्त्व प्रकट होने की अनुभूति के समय में नवतत्त्व के ऊपर लक्ष्य नहीं होता, वहाँ तो शुद्धजीव के ऊपर ही उपयोग लक्षित होता है और 'यह मैं हूँ' - ऐसी जो निर्विकल्प प्रतीति है, उसके ध्येयभूत एकमात्र शुद्धात्मा ही है।

समाचार दर्शन -

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 2 सितम्बर से 11 सितम्बर, 2011 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

1. मुम्बई (भायन्दर-वेस्ट) : यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर जयपुर से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार गाथा 14, दशलक्षण धर्म, भगवान आत्मा, आत्मा की प्राप्ति का उपाय और क्षमावणी विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। दोपहर और रात्रि में पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित जगदीशजी, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, पण्डित वरुणजी शास्त्री, विदुषी अनुप्रेक्षा जैन शास्त्री एवं विदुषी मुक्ति जैन शास्त्री के प्रवचनों और कक्षाओं का लाभ मिला। प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

2. जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण महामण्डल विधान का आयोजन किया गया, तत्पश्चात् डॉ. श्रेयांसजी सिघई शास्त्री (विभागाध्यक्ष-जैनदर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर) द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के संवर अधिकार पर प्रवचन हुये। दोपहर में श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती ज्योति सेठी द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व छात्र प्रवचन के पश्चात् पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा 'धर्म के दशलक्षण' विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। रात्रि में महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि यहाँ सुगन्ध दशमी के दिन महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों द्वारा सायंकाल 'पंचकल्याणक महामहोत्सव' विषय पर आधारित भव्य सजीव झांकी का आयोजन किया गया, जिसकी जयपुर के हजारों लोगों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मौ ने संपन्न कराये। समस्त कार्यक्रम पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

3. जयपुर (आदर्शनगर) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन नित्यनियम पूजन के उपरान्त ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के विभिन्न विषयों पर एवं सायंकाल समयसार कलश के आधार से प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

4. बड़नगर (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रात: समयसार के कर्ताकर्म अधिकार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में शंका-समाधान द्वारा तत्त्वचर्चा हुई। विशेष उपलब्धि के रूप में इन्टरनेट के माध्यम से भी देश-

विदेश में सैंकड़ों साधर्मियों ने प्रवचनों का लाभ लिया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

5. मुम्बई (मलाड) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर रामलीला मैदान में प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा समयसार की गाथा 17-19 पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित अनिलजी शास्त्री द्वारा कराये गये।

6.राजकोट (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन दशलक्षण मण्डल विधान के पश्चात् ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली द्वारा प्रात: प्रवचनसार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्ग प्रकाशक के विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

7. भोपाल-कोहेफिजा (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर जयपुर से श्री टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् समयसार की 14वीं गाथा पर प्रवचन हुए एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशधर्मों की चर्चा हुई। साथ ही आपकी सुपुत्री विदुषी प्रतीति शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन-विधान के उपरांत दोपहर में इष्टोपदेश की कक्षा एवं रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

8. मुम्बई (बोरीवली) : यहाँ प्रतिदिन प्रात: नित्यनियम पूजन के पश्चात् दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला साथ ही समाज के विशेष आग्रह पर रात्रि में जैन भूगोल विषय पर सारगर्भित युक्तिसंगत कक्षा ली गई। रात्रि में प्रवचन के पूर्व गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन होता था। दोपहर में विदुषी मुक्ति जैन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षाएं ली गई।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना ने संपन्न कराये।

9. नागपुर (महा.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर इतवारी स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर में ब्र.नन्हे भैया सागर द्वारा तीनों समय प्रवचन हुये। दोपहर को कल्पद्रुम मण्डल विधान का आयोजन पण्डित अंकितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित सुकुमारजी शास्त्री कोल्हापुर एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर द्वारा किया गया। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 9 सितम्बर को जयपुर पंचकल्याणक का आमंत्रण देने हेतु पधारे पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा 'धर्म क्यों' व 'इन भावों का फल क्या होगा' विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

10. सोनागिरि (म.प्र.) : यहाँ प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत ब्र.रवीन्द्रजी द्वारा समयसार पर प्रवचन एवं दोपहर में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित ज्ञानचंदजी

जैन विदिशा द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक पर एवं पण्डित मानमलजी कोटा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित मुकेशजी शास्त्री विदिशा, पण्डित लालजीरामजी विदिशा द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

11. सागर गोरमूर्ति-परकोटा (म.प्र.) : यहाँ प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

12. अहमदाबाद-नवरंगपुरा (गुज.) : यहाँ प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन द्वारा समयसार की गाथा 17-18 पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

विशिष्ट उपलब्धि के रूप में यहाँ नवीन युवा फैडरेशन का गठन हुआ, जिसमें 85 युवाओं ने सदस्यता ग्रहण की। **- अजितकुमार जैन**

13. देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन हुये। तत्पश्चात् पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर द्वारा समयसार की गाथा 320 पर एवं रात्रि में अपूर्व अवसर पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का पाठ एवं श्रीमती स्वर्णलताजी जैन द्वारा श्रावकाचार पर कक्षा ली गई। रात्रि में कु.प्रज्ञा जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा कराये गये।

14. अहमदाबाद-रामेश्वर पार्क (गुज.) : यहाँ प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरान्त पण्डित ज्ञाता झांझरी उज्जैन द्वारा छहढाला पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। विशिष्ट उपलब्धि के रूप में यहाँ युवाओं को धर्म की रुचि जाग्रत हुई।**- श्यामलाल जैन**

15. बेलगांव (कर्नाटक) : यहाँ प्रतिदिन दशलक्षण मण्डल विधान एवं सोलहकारण मण्डल विधान के उपरांत पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा समयसार की गाथा 308 से 311 पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में धवलश्री पाटील, सुधा चौकरे, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री व पण्डित मिथुनजी शास्त्री द्वारा प्रवचन व कक्षायें ली गई। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

16. ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ डॉ. दीपकजी जैन जयपुर द्वारा प्रात: बड़ा मंदिर में समयसार, दोपहर में सीमंधर जिनालय में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं सायंकाल नया मंदिर में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

17. रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर द्वारा विवेकानन्दनगर में पंचपरावर्तन पर एवं शंकरनगर में चन्द्रप्रभ जिनालय में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी ने कराये।

18. मुम्बई-जोगेश्वरी (वेस्ट): यहाँ प्रतिदिन पण्डित राजेशजी जैन जबलपुर द्वारा दशलक्षण धर्म, छहढाला एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। प्रात: जिनेन्द्र पूजन भी करायी गयी।

सामाजिक एकता की नई मिसाल

क्षमावाणी के मंगल अवसर पर बड़ौदा (गुजरात) की दिगम्बर जैन समाज के सभी सम्प्रदायों, सभी दि. जैन मन्दिरों, सभी उपजातियों एवं समस्त संस्थाओं ने मिलकर सामाजिक एकता की एक ऐसी मिसाल पेश की कि जो भारतवर्ष के सभी नगरों की समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श है।

इस अवसर पर दिव्य भास्कर नामक दैनिक समाचार पत्र में दो पृष्ठों का एक विज्ञापन प्रकाशित किया गया, जिसमें डॉ.हुकमचंद भारिल्ल की धर्म के दशलक्षण पुस्तक के आधार पर दशलक्षण महापर्व और क्षमावणी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए दो आलेख प्रस्तुत किये गये। इसमें बिना किसी भेदभाव के दिगम्बर समाज की सभी संस्थाओं, सभी मन्दिरों, सभी सम्प्रदायों और सभी उपजातियों ने हार्दिक सहयोग दिया।

इस कार्य में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान अजित जैन बड़ौदा का रहा।

11 शिलान्यास संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ दिनांक 6 व 7 अगस्त को कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में नवीन निर्माणाधीन श्री सीमन्धर जिनालय एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर में 2 दिवसीय वेदी एवं शिखर शिलान्यास महोत्सव सानन्द संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री ज्ञानमलजी लुहाड़िया परिवार ने किया।

इस अवसर पर संजयजी शास्त्री मंगलायतन के समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। शिलान्यास विधि का कार्यक्रम पण्डित अशोकजी लुहाड़िया ने संपन्न कराया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री पदमचंदजी पहाड़िया इन्दौर उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुख्य वेदी, 4 जिनवाणी मन्दिर, मुख्य शिखर, आगे छवि शिखर एवं 4 मुनिराजों के चरण ह्न इसप्रकार कुल 11 शिलान्यास सम्पन्न हुये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 11 अक्टूबर	जयपुर (राज.)	शिक्षण शिविर
21 व 22 अक्टूबर	मंगलायतन-अलीगढ	सोगानीजी की जन्मशती
23 से 27 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
6 से 10 दिसम्बर	दाहोद (गुज.)	पंचकल्याणक
19 से25 जनवरी 2012	राघौगढ (म.प्र.)	पंचकल्याणक

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक हेतु –

बुंदेलखण्ड में पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन संपन्न

बुंदेलखण्ड में दिनांक 9 अगस्त से 18 अगस्त तक पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन संपन्न हुआ। यह रथ ग्वालियर से प्रारम्भ होकर ललितपुर, बानपुर, टीकमगढ, घुवारा, द्रोणगिरी, बकस्वाहा, शाहगढ, जबेरा, दमोह, अभाना, दलपतपुर, बण्डा, खडैरी, सोनागिर, गढाकोटा होते हुए गौरझामर पहुँचा। प्रत्येक स्थान पर रथ का धूमधाम के साथ स्वागत हुआ व नगर भ्रमण कराया गया। सभी स्थानों पर पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित सौरभजी शास्त्री खड़ैरी भी रथ में सम्मिलित थे।

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी पर रथ का स्वागत छतरपुर के कलेक्टर श्री राहुलजी जैन द्वारा हुआ। प्रत्येक जगह पर पंचकल्याणक का बड़े उत्साह व भक्तिभावपूर्वक आमंत्रण दिया गया। सभी स्थानों की समाज ने रथ का भरपूर स्वागत किया तथा पंचकल्याणक महोत्सव में जयपुर आने हेतु कलशों एवं आवास आदि की बुकिंग भी करायी।

दो दिवसीय यात्रा संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा इन्दौर द्वारा दिनांक 30 व 31 जुलाई को चैतन्यधाम एवं सोनगढ की दो दिवसीय यात्रा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर यात्रा सर्वप्रथम चैतन्यधाम पहुँची, तत्पश्चात् रात्रि में सोनगढ पहुँची। वहाँ पहुँचकर सभी लोगों ने अपने सौभाग्य की सराहना की। प्रात: पूजन-भक्ति के पश्चात् गुरुदेवश्री द्वारा समसयसार की 12-13वीं गाथा पर सी.डी. प्रवचनों का लाभ लिया। सोनगढ से निकलकर यात्रासंघ वस्त्रापुर पहुँचा, जहाँ सभी तीर्थयात्रियों ने सुन्दर जिनमन्दिरों के दर्शन किये।

इस यात्रा में महासमिति के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या एवं म.प्र. के अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या सहित लगभग 115 लोग सम्मिलित थे।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com